P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

गढ़वाल मण्डल में परिवहन एवं संचार का औद्योगिक विकास से सह–सम्बन्ध

कृष्ण गोपाल
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
डॉ भीमराव अम्बेडकर
विश्वविद्यालय,
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

विकास एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है और किसी भी देश, प्रदेश एवं क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक विकास के आधार की स्थापना में परिवहन एवं संचार की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। आर्थिक विकास में वहाँ के उद्योगों की मुख्य भूमिका है।

अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मण्डल पर्वतीय क्षेत्र है तो यहाँ पर वन आधारित उद्योगों की अधिकता है। उद्योगों के विकास में परिवहन एवं संचार की मुख्य भूमिका है। गढ़वाल मण्डल में कुल 13698 औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित हैं जिनमें 44 वृहद स्तरीय, 204 लघु स्तरीय एवं 8221 कुटीर उद्योग हैं। अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मण्डल में प्रति दस हजार जनसंख्या पर 27.80 उद्योग हैं जबकि प्रति 100 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर 42.20 उद्योग हैं।

परिवहन एवं संचार के माध्यम से किसी उद्योग को कच्चा माल व श्रमिकों को उद्योग केन्द्र तक पहुँचाने तथा उत्पादित माल को बाजार तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

औद्योगिक विकास में परिवहन एवं संचार ठीक उसी प्रकार कार्य करता है जिस प्रकार से मानव शरीर में रीढ़ की हड्डी का कार्य है। गढ़वाल मण्डल के औद्योगिक विकास को विकसित करने के लिए परिवहन एवं संचार विकास करना अति आवश्यक है।

मुख्य शब्द : औद्योगीकरण, नवीन तकनीकि, अग्रसर, श्रेय, परिकल्पना, द्वितीयक स्रोत, अर्थ एवं सांख्यिकीय, परिप्रेक्ष्य, आधारभूत, अर्थव्यवस्था, सुनियोजित, चिराई, ठेकी, कुमचा, भदेले, पंचपात्र, उत्पादित, आदान–प्रदान, सह–सम्बन्ध।

प्रस्तावना

आधुनिक औद्योगीकरण की विकास प्रक्रिया में परिवहन व संचार के साधनों की नवीन तकनीक का महत्त्वपूर्ण योगदान है और उद्योगों के स्थानीकरण व विकास में पर्याप्त सहायता प्रदान की है। परिवहन एवं संचार के सम्बद्ध गतिविधियों व सेवाओं के द्वारा व्यापार का जादुई ढंग से प्रसार हुआ है जिससे हमारे आवास, कार्यस्थल, संचार उपकरण, शिक्षा प्रणाली, मनोरंजन के साधन आदि सब बदल गये हैं। एक तरह से हमारी जीवन शैली में ही परिवर्तन आ गया है। लेकिन जब आर्थिक विकास की दर तेज होती है तो बुनियादी ढाँचे की माँग बढ़ती है फिर चाहे वह परिवहन हो या दूर संचार। अध्ययन क्षेत्र में परिवहन सेवा और दूरसंचार की आवश्यकता माँग पर आधारित है और परिवहन सेवाओं की माँग तो आर्थिक विकास की दर से भी तेज बढ़ रही है। इन दोनों के बीच 1:15 का अन्तर है। अर्थात् परिवहन व संचार के नये साधनों के कारण सभ्यता निरन्तर विकास की ओर अग्रसर होती जा रही है। यदि संचार अंधकारमय युग से निकलकर प्रकाशमय युग में आया है तो इसका श्रेय परिवहन व संचार के साधनों को ही है।

अध्ययन क्षेत्र

भारतवर्ष के नवोदित 27वें राज्य उत्तराखण्ड के कुमायूँ मण्डल के पूर्व–उत्तर में गढ़वाल मण्डल स्थित है। गढ़वाल मण्डल का अक्षांशीय विस्तार $29^0 27' 30''$ उत्तर से $31^0 28'$ उत्तर तक तथा देशान्तरीय विस्तार $77^0 10'$ पूर्व से $80^0 05'$ पूर्व तक स्थित है। गढ़वाल मण्डल की उत्तरी सीमा हिमांचल प्रदेश तथा चीन से, पश्चिमी सीमा हरियाणा से, पूर्व में कुमायूँ मण्डल अर्थात् पिथौरागढ़, बागेश्वर, अल्मोड़ा, नैनीताल, ऊधमसिंह नगर एवं दक्षिणी सीमा उत्तर प्रदेश राज्य से निर्धारित है।

प्रशासकीय आधार पर गढ़वाल मण्डल को सात जनपदों में उत्तरकाशी, चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, देहरादून एवं हरिद्वार में

विभाजित किया गया है। गढ़वाल मण्डल का क्षेत्रफल 32448.500 वर्ग किमी है। यह मण्डल 54 विकासखण्डों में विभक्त है। यहाँ पर 16 नगरपालिकायें, 16 नगर पंचायतें, 48 कस्बे, 30 तहसीलें, 3802 ग्राम पंचायतें, 8706 अधिवासित ग्राम हैं। (मानचित्र–1)

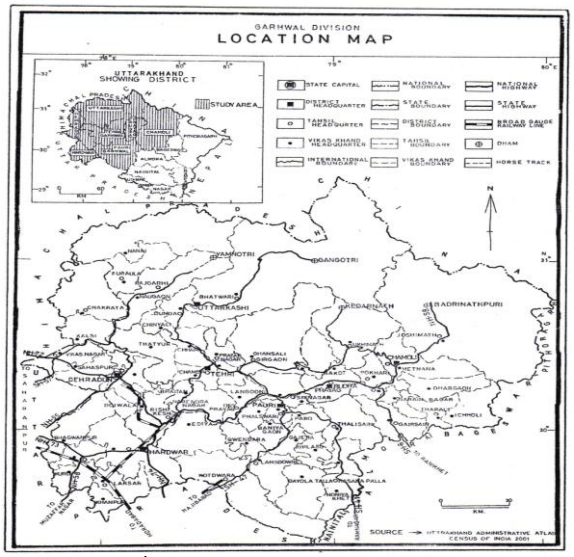

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य निरूपित किये गये हैं–

1. मण्डल में परिवहन की ऐतिहासिक स्वरूप का ज्ञान करना।
2. मण्डल का संक्षिप्त भौगोलिक ज्ञान प्राप्त करना।
3. मण्डल में सड़कों के स्वरूप उनकी दिशा एवं दशा का अध्ययन करना।
4. मण्डल में परिवहन के मार्ग में पड़ने वाली बाधाओं को ज्ञात कर नियोजन की रूपरेखा प्रस्तुत करना।

विधितंत्र

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों पर आधारित है। यह आँकड़े जिला अर्थ एवं सांख्यिकीय विभाग एवं परिवहन विभाग से प्राप्त किये गये हैं।

परिकल्पनाएं

किसी भी शोध कार्य के लिए परिकल्पनायें आधार प्रस्तुत करती हैं प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. परिवहन के साधन ग्राम्य विकास की कुंजी है।
2. परिवहन एवं संचार के साधनों के विकास के औद्योगिक विकास को गति मिलती है।
3. यातायात व संचार के साधनों के विकास से आधुनिकता में तीव्रगति से वृद्धि होती है।

औद्योगिक विकास

औद्योगिक विकास का तात्पर्य यह है कि किसी क्षेत्र विशेष में उद्योगों की स्थापना कर अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं जैसे – कृषि, पशु, वन, खनिज, शक्ति आदि का उत्पादन, वितरण एवं वित्त व्यवस्था को विकसित करने से है। इस परिप्रेक्ष्य में सर्वश्री बावर एवं मामे का कहना है कि ''औद्योगीकरण व्यापक रूप से आर्थिक विकास तथा उच्च रहन–सहन के स्तर की कुंजी है। औद्योगिक विकास के फलस्वरूप पूंजीगत तथा आधारभूत उद्योग विकसित होते हैं, विद्युत एवं शक्ति का निर्माण होता है आर्थिक संरचना जैसे– यातायात, परिवहन एवं संचार के साधनों आदि का विकास होता है जिससे क्षेत्र के भावी आर्थिक विकास की सम्भावनाएँ बढ़ने लगती हैं।

औद्योगीकरण के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए स्वर्गीय पं0 जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि ''सभी राष्ट्र जिस देवता की आराधना करते हैं वह देवता है औद्योगीकरण, वह देवता है मशीन, वह देवता है विशाल उत्पादन और प्राकृतिक साधनों का सर्वोपयुक्त उपयोग। अर्थात् औद्योगीकरण से तात्पर्य है कि क्षेत्र में उद्योगों की स्थापना कर निम्न उत्पादकता, प्राचीन पद्धति कृषि व्यवस्था, परिवहन एवं संचार के अविकसित साधनों, धीमी पूंजी निर्माण, प्रतिव्यक्ति निम्न आय, निम्न जीवन स्तर, निर्धनता एवं बेरोजगारी जैसे सभी समस्याओं का समाधान कर संतुलित व सुनियोजित ढंग से विकास करना है।

अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मण्डल का सम्पूर्ण क्षेत्रफल पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण यहाँ पर वनों पर आधारित उद्योगों का विकास होने की प्रबल सम्भावना है। यहाँ पर बड़े उद्योगों की अपेक्षा कुटीर एवं लघु स्तरीय उद्योगों के विकास की अच्छी सम्भावनाएँ व्याप्त हैं। गढ़वाल मण्डल में अधिक से अधिक उद्योग केन्द्र देहरादून एवं हरिद्वार जनपद में विद्यमान हैं। देहरादून जनपद में चीनी उद्योग, वस्त्र उद्योग, चूने की भट्टियाँ, चाय, चावल, बल्ब, कागज, लुग्दी, चिराई उद्योग, वैज्ञानिक उपकरण, लकड़ी उद्योग, बेंत व छड़ियाँ, सीमेंट उद्योग, एन्टीबायोटिक दवाओं के आदि अनेक बड़े व छोटे उद्योग स्थापित हैं। देहरादून जनपद में कुअनवाला सीमेंट कारखाना (मुनिदाल गांव राजपुर), स्टेडिया केमिकल्स लि0 (ऋषिकेश) रिस्पना नदी के किनारे अनेक चूने की भट्टियाँ स्थित हैं। यहाँ पर मारबल चिप्स कारखाने भी स्थापित किए गए हैं।

देहरादून जनपद में डील (DEAL) ऑटो इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑर्डिनेन्स फैक्ट्री में औद्योगिक इकाइयाँ रायपुर में स्थापित हैं। देहरादून के डोईवाला विकासखण्ड में चीनी मिल है। लघु एवं कुटीर उद्योगों में ऊन, टोकरी, रस्सी, चमड़े व लकड़ी के काम, ऊन बुनने, कातने तथा ऊनी सामान निर्मित करने के लिए प्रेमनगर (देहरादून) में प्रशिक्षण एवं उत्पादन केन्द्र स्थापित हैं। रेशम उद्योग के लिए देहरादून एवं पौड़ी गढ़वाल में रेशम के कीड़े पालने के लिए शहतूत के वृक्षों को लगाने का कार्य किया गया है। देहरादून में नगरीय औद्योगिक संस्थान व विकासनगर में ग्रामीण औद्योगिक संस्थान स्थापित हैं।

हरिद्वार जनपद में केन्द्र सरकार द्वारा भारत हैवी इलैक्ट्रीकल्स हरिद्वार, फाउण्ड्री फोर्ज हरिद्वार में औद्योगिक संस्थापित किए हैं। रुड़की शहर में नगरीय औद्योगिक आस्थान स्थापित हैं। सीमेंट उद्योग की भी फैक्ट्रियाँ स्थापित हैं। गढ़वाल मण्डल के अन्य जनपदों में इलेक्ट्रॉनिक उद्योग कोटद्वार एवं लैंसडाउन, ऊनी कपड़ा उद्योग पौढ़ी में स्थापित है। लघु एवं कुटीर उद्योगों में ऊन, टोकरी, रस्सी, देशी शराब बनाना तथा चमड़े व लकड़ी का उल्लेखनीय है। अध्ययन क्षेत्र में ऊन बुनने, कातने तथा ऊनी सामान निर्मित करने के लिए छामा (टिहरी गढ़वाल), देवगढ़ (पौड़ी गढ़वाल), प्रेमनगर

(देहरादून) तथा मुद्रतल्ला (चमोली) में प्रशिक्षण एवं उत्पादन केन्द्र स्थापित किए गए हैं।

गढ़वाल मण्डल में गृह एवं हस्तशिल्प उद्योगों की अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। रिंगाल से डाले, कंडी, टोकरी, सूप आदि तैयार किए जाते हैं। मुख्य रूप से चमोली जनपद में पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में वनों की अधिकता पायी जाती है। इसलिए लकड़ी से पानी, ठेकी, कुमचा, भदेले आदि तैयार किये जाते हैं। गृह उद्योगों में मिट्टी के बर्तन, दीप, सुराही, कलश, गमले, गुल्लक व चिलम आदि का निर्माण किया जाता है। ताम्र शिल्प एक लघु उद्योग का रूप धारण किए हुए है। इसमें ताँबे से परात, लोटा, गागर, पंचपात्र, दीप आदि का कुशलतापूर्वक निर्माण किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में बाँस से सूप, डाले, कण्डी, छापड़ी, टोकरी आदि तैयार किये जाते हैं। गढ़वाल मण्डल में भेड़ें अधिक पायी जाती हैं। भेड़ों की ऊन से कम्बल, कालीन, पश्मीना, चुटका, दन, थुलमा आदि तैयार किये जाते हैं। चर्मशिल्प भी कहीं–कहीं पाया जाता है। यहाँ बैग, पर्स, जूता आदि तैयार किये जाते हैं।

वर्तमान समय में गढ़वाल मण्डल की अर्थव्यवस्था वहाँ के लघु उद्योगों एवं पर्यटन उद्योग पर ही निर्भर करती है। कई वर्षों से यहाँ पर पर्यटन उद्योग का इतनी तीव्र गति से विकास हुआ है कि पर्यटन उद्योग के प्रति लोगों का दृष्टिकोण नहीं बदला बल्कि सभी राष्ट्रों में व्यापारिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व धार्मिक पर्यटन को प्राथमिकता दी जाती है। गढ़वाल मण्डल में धार्मिक, प्राकृतिक व साहसिक पर्यटन स्थल होने के कारण विकास हो रहा है। हरिद्वार, चमोली, उत्तरकाशी, टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, रुद्रप्रयाग, देहरादून जनपदों में अनेक पर्यटन स्थल हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

उद्योगों के प्रकार

वृहद स्तरीय उद्योग

अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मण्डल का अधिकांश क्षेत्र पर्वतीय क्षेत्र है जिसके कारण यहाँ पर वृहद स्तर के उद्योग स्थापित नहीं हो सकते हैं। देहरादून एवं हरिद्वार जनपदों में ही वृहद स्तर के उद्योग स्थापित हैं। गढ़वाल मण्डल में 44 वृहद औद्योगिक इकाइयाँ स्थापित है। सबसे अधिक वृहद औद्योगिक इकाइयाँ देहरादून जनपद के सहसपुर विकासखण्ड में 12 संख्या हैं। सबसे कम हरिद्वार जनपद के बहादराबाद विकासखण्ड में वृहद स्तरीय उद्योग की संख्या 1 है।

मध्यम स्तरीय उद्योग

अध्ययन क्षेत्र में मध्यम स्तरीय उद्योगों का अभाव उत्तरकाशी, चमोली व रुद्रप्रयाग जनपदों में पाया जाता है। गढ़वाल मण्डल में मध्यम स्तर के उद्योग इकाइयों की संख्या 204 है। सर्वाधिक मध्यम स्तर के उद्योग देहरादून जनपद के नगर क्षेत्र में 85 इकाइयाँ हैं। सबसे कम मध्यम स्तर के उद्योग देहरादून के विकासनगर विकासखण्ड में 5 इकाइयाँ हैं।

लघु स्तरीय उद्योग

अध्ययन क्षेत्र का सम्पूर्ण क्षेत्रफल पर्वतीय है। इसलिए यहाँ पर लघु स्तरीय उद्योगों का विस्तार अधिक देखने को मिलता है। लघु स्तर के उद्योगों की इकाइयों की गढ़वाल मण्डल में संख्या 5229 है। सर्वाधिक लघु स्तर के उद्योगों की संख्या हरिद्वार जनपद के बहादराबाद विकासखण्ड में 687 इकाइयाँ हैं। सबसे कम लघु स्तर के उद्योग नारायण बगड़ (चमोली) विकासखण्ड में 2 इकाइयाँ हैं।

कुटीर स्तरीय उद्योग

कुटीर स्तरीय उद्योग अध्ययन क्षेत्र में 8221 इकाइयाँ हैं। सर्वाधिक कुटीर स्तरीय उद्योग बहादराबाद विकासखण्ड (हरिद्वार जनपद) में 558 इकाइयाँ है। सबसे कम कुटीर स्तरीय उद्योग रिखनीखाल विकासखण्ड (पौड़ी गढ़वाल) में 2 इकाइयाँ हैं। उत्तरकाशी जनपद में एवं रुद्रप्रयाग व हरिद्वार जनपद में नगरीय क्षेत्र में लघु स्तरीय उद्योगों की संख्या शून्य है। अध्ययन क्षेत्र में औद्योगिक इकाइयों को तालिका–1 द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका–1 : गढ़वाल मण्डल में पंजीकृत औद्योगिक इकाइयों की संख्या (2006–07)

क्र0सं0	जनपद का नाम	वृहद स्तरीय उद्योग	लघु स्तरीय उद्योग	कुटीर उद्योग	कुल
1.	उत्तरकाशी	-	-	-	155
2.	चमोली	-	-	1360	1540
3.	रुद्रप्रयाग	-	-	72	361
4.	टिहरी गढ़वाल	-	21	1129	1404
5.	पौड़ी गढ़वाल	-	12	1523	2077
6.	देहरादून	32	165	2529	3072
7.	हरिद्वार	12	06	1608	5089
	गढ़वाल मण्डल	**44**	**204**	**8221**	**13698**

औद्योगिक विकास से परिवहन एवं संचार का सह–सम्बन्ध

परिवहन एवं संचार में वस्तुओं, मानव एवं मानवीय विचारों का प्रवाह अन्तर्निहित होता है, मनुष्य तथा उनके विचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचते हैं। मूलतः परिवहन एवं संचार नेटवर्क (संजाल) निश्चित रूप से औद्योगिक व वाणिज्यक विकास में धमनी का कार्य करता है। परिवहन एवं संचार के माध्यम के किसी उद्योग को कच्चा माल व श्रमिकों को उद्योग केन्द्र तक पहुँचने में प्रमुख भूमिका निभाती है तथा उत्पादित माल को बाजार केन्द्रों तक समय पर पहुँचने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

किसी उद्योग केन्द्र की स्थापना कच्चे माल की प्राप्ति के स्थान पर है तो उस उद्योग केन्द्र के लिए श्रमिकों व उत्पादित माल के लिए ही परिवहन पर कम व्यय होगा। उद्योग केन्द्र की स्थापना ऐसे स्थान पर है जहाँ पर श्रमिक व कच्चा माल तथा बाजार केन्द्र वहीं पर उपलब्ध है तो उसमें परिवहन पर व्यय कम होगा। परिवहन के साथ–साथ उद्योग के विकास के लिए सूचना के आदान–प्रदान की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यदि किसी देश का औद्योगिक विकास करना हो तो वहाँ की परिवहन एवं संचार व्यवस्था को विकसित करना होगा।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

औद्योगिक विकास पर परिवहन एवं संचार का प्रभाव

अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मण्डल में प्रति दस हजार जनसंख्या पर उद्योगों की संख्या का अध्ययन करने के लिए अध्ययन क्षेत्र को 5 वर्गों में विभक्त किया गया है। प्रथम वर्ग में 50 उद्योगों से अधिक वाले विकासखण्डों में 6 विकासखण्ड क्रमशः जोशीमठ (चमोली), कल्जीखाल, पौड़ी, थलीसैंण, खिर्सू (पौड़ी गढ़वाल), बहादराबाद (हरिद्वार) सम्मिलित हैं। द्वितीय श्रेणी 40–50 के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के 8 विकासखण्ड क्रमशः कर्णप्रयाग, दशोली, नारायण बगड़, थराली (चमोली), दुगड्डा (पौड़ी गढ़वाल), रायपुर (देहरादून), भगवानपुर एवं नारसन (हरिद्वार) समाहित हैं।

तालिका–2 : गढ़वाल मण्डल में उद्योगों की संख्या (2006–07)

क्र0 सं0	जनपद का नाम	प्रति दस हजार जनसंख्या पर उद्योग	प्रति 100 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर उद्योग
1.	उत्तरकाशी	05.20	01.90
2.	चमोली	41.60	20.50
3.	रुद्रप्रयाग	15.90	14.80
4.	टिहरी गढ़वाल	23.20	37.00
5.	पौड़ी गढ़वाल	29.80	39.70
6.	देहरादून	23.90	99.50
7.	हरिद्वार	35.20	215.60
	गढ़वाल मण्डल	27.80	42.20

वर्गमूल्य 30–40 के मध्य अध्ययन क्षेत्र के 10 विकासखण्ड सम्मिलित है। श्रेणी 20–30 के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के 11 विकासखण्डों को सम्मिलित किया गया है। न्यूनतम वर्ग 30 से कम उद्योगों की श्रेणी में सर्वाधिक 19 विकासखण्ड सम्मिलित हैं। विस्तृत अध्ययन हेतु तालिका क्रमांक–2 व मानचित्र क्रमांक–2 दृष्टव्य है।

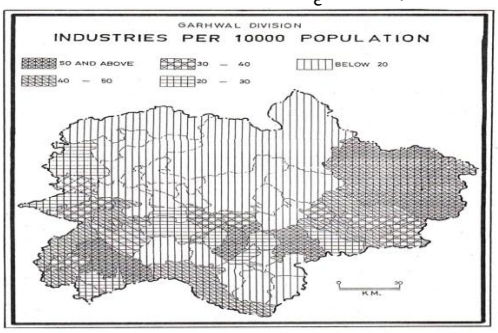

अध्ययन क्षेत्र गढ़वाल मण्डल के प्रति 100 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर उद्योगों की संख्या का अध्ययन करने हेतु शोधार्थी ने अध्ययन क्षेत्र को पाँच वर्गों में विभाजित किया है। प्रति 100 वर्ग किमी पर 120 से अधिक उद्योग इकाई 10 विकासखण्डों में पायी जाती है। पौड़ी दुगड्डा (पौड़ी गढ़वाल), कालसी, विकासनगर, रायपुर, डोईवाला (देहरादून), भगवानपुर, रुड़की, नारसन व बहादरबाद (हरिद्वार) विकासखण्ड सम्मिलित हैं। द्वितीय श्रेणी 90–120 के मध्य अध्ययन क्षेत्र के 3 विकासखण्ड क्रमशः चकराता, सहसपुर (देहरादून), लक्सर (हरिद्वार) सम्मिलित है।

वर्गमूल्य 60–90 के मध्य अध्ययन क्षेत्र में 7 विकासखण्ड सम्मिलित है जो क्रमशः नारायण बगड़ (चमोली), जाखणीधार, नरेन्द्रनगर, कीर्तिनगर (टिहरी गढ़वाल), कल्जीखाल, खिर्सू (पौड़ी गढ़वाल) व खानपुर (हरिद्वार) है। चतुर्थ श्रेणी में 30–60 के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के 14 विकासखण्डों को समाहित किया गया है। न्यूनतम श्रेणी 30 से कम उद्योग इकाई प्रति 100 वर्ग किमी पर आती है। इस वर्ग के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के 54 विकासखण्डों में से 20 विकासखण्ड सम्मिलित हैं जो कि अन्य वर्गों में से अधिक है। विस्तृत अध्ययन हेतु तालिका क्रमांक–2 व मानचित्र क्रमांक–3 दृष्टव्य है।

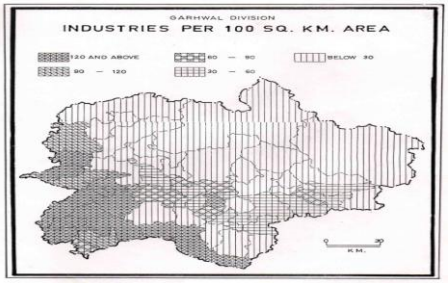

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र के औद्योगिक विकास को विकसित करने के लिए कच्चे माल, श्रमिक व उत्पादित माल को बाजार तक ले जाने के लिए परिवहन की अति आवश्यकता होती है। बाजार में माँग की तत्काल जानकारी हेतु संचार की आवश्यकता होती है। परिवहन एवं संचार औद्योगिक विकास की रीढ़ की हड्डी है। मानव की रीढ़ की हड्डी में विकृत आ जाती है तो मानव पूर्ण रूप से बेकार हो जाता है। अतः गढ़वाल मण्डल का औद्योगिक विकास करना है तो वहाँ के परिवहन एवं संचार का विकास करना अति आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Singh, S.P. & Gambheer, T.R., Rajya and Industries, P. 16.

उपाध्याय, वी0के0, खनिज एवं उद्योग ''उत्तरांचल सामान्य अध्ययन'', यूथ कॉम्पिटीशन टाइम्स, पृ0 32.

सिंह, सत्यप्रकाश, ''उद्योग'' पॉपुलर उत्तराखण्ड, सामान्य ज्ञान 2008, रमेश पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ0 93.

शर्मा, ओ0पी0, ''राजस्थान में ग्रामीण पर्यटन'', कुरुक्षेत्र, फरवरी 2006, पृ0 34.

डिस्ट्रिक गजेटियर ऑफ गढ़वाल डिवीजन, 1965.

Hansen and Singh, K.N., "Transport Network in Rural Development", Institute for Rual Eco Development, Gorakhpur, India, 1990, P. 6.

एन0 मोहनन, गाँवों की खुशहाली में सड़कों की भूमिका, कुरुक्षेत्र, अक्टूबर 2006, पृ0 20–23

सिंह, कृष्ण कुमार, ग्रामीण विकास और आधारभूत सुविधाएं, योजना 15 जुलाई 1991, पृष्ठ 13.